Contents

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : हास्य एवं व्यंग्य विषय का शास्त्रीय अध्ययन **1–45**

- **हास्य के भेद**
  हास्य के प्रकार, हास्य की परिभाषा,
  भारतीय विद्वानों की दृष्टि से हास्य की परिभाषा,
  हास्य का पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से विवेचन
- **व्यंग्य का शास्त्रीय अध्ययन**
  व्यंग्य क्या है ?, व्यंग्य की भारतीय व्युत्पत्ति,
  व्यंग्य की पाश्चात्य व्यत्पत्ति, व्यंग्य की परिभाषा,
  भारतीय आलोचकों की परिभाषायें,
  पाश्चात्य विद्वानों की व्यंग्य विषयक परिभाषायें
- **स्वरूपतः हास्य प्रभेद व्यंग्य**
  उपहास और व्यंग्य, परिहास और व्यंग्य
- **व्यंग्य के तत्त्व**
  व्यंग्य का उद्देश्य एवं प्रयोजन, व्यंग्य के प्रकार,
  हास्य और व्यंग्य में भेद

द्वितीय अध्याय : हास्य-व्यंग्य काव्य की विकास यात्रा **45–72**

- व्यंग्य की परिभाषा और स्वरूप
- भक्तिकालीन साहित्य में व्यंग्य
- रीतिकाल में व्यंग्य
- भारतेन्दुयुग में हास्य-व्यंग्य काव्य द्विवेदी युगीन हास्य-व्यंग्य काव्य
- छायावाद युग
- प्रगतिवाद युग
- प्रयोगवाद
- स्वातंत्र्योत्तर युग

तृतीय अध्याय : हास्य-व्यंग्य के प्रमुख हस्ताक्षर **73–113**

- काका हाथरसी
- बरसाने लाल चतुर्वेदी
- गोपाल प्रसाद व्यास
- रामप्रसाद मिश्र
- डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल

- योगेन्द्र मौद्गिल
- कालीचरण गौतम
- चिरंजीव
- मिश्रीलाल जायसवाल
- जैमिनी हरियाणजी
- बौड़म लखनवी
- डॉ. किशोर काबरा
- अल्हड़ बीकानेरी
- ओम प्रकाश आदित्य
- राम किशोर मेहता
- श्रीराम ठाकुर दादा
- आदित्य शर्मा चेतन
- हुल्लड़ मुरादाबादी
- प्रेम किशोर ''पटाखा''
- आशाकरण अटल
- अशोक चक्रधर
- जयप्रकाश ''रुसवा''
- पं. सुरेश नीरव
- अशोक अंजुम

चतुर्थ अध्याय : हास्य-व्यंग्य रचनाओं में राजनीतिक दृष्टिकोण **114-239**

- चुनाव
- प्रतिनिधि नेता चरित्र
- कुर्सी की राजनीति
- लालफीताशाही
- प्रशासकीय भ्रष्टाचार
- भ्रष्ट खोखले आदर्श
- दल-बदल की राजनीति
- राजनीति व्यवसायी बन गयीं है
- राजनैतिक भ्रष्टाचार
- सत्ताप्राप्ति के पश्चात् आत्मसुख में लीन राजनेता।
- समस्याग्रस्त आम आदमी और भ्रष्ट राजनीति
- भारतीय लोकंतत्र

पंचम अध्याय : सामाजिक सांस्कृतिक एवं पारिवारिक हास्य-व्यंग्य काव्य **240–364**

- **सीधा सामाजिक परिवेश पर प्रहार – फैशन**
- **पश्चिमोन्मुखी आचार–विचारों पर हास्य–व्यंग्य –पाश्चात्य सभ्यता**
- **समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अनैतिकता, अन्याय सामाजिक भ्रष्टाचार**
  व्यवस्था और पुलिस विभाग
  सरकारी विभाग
  न्याय व्यवस्था
- **सांस्कृतिक और समाज की विविध असंगतियों को लक्ष्य करके हास्य– व्यंग्य कविताओं का मूल्यांकन**
  सांस्कृतिक मूल्यों का पतन
- **सामाजिक रुढ़ियाँ**
  दहेज प्रथा
  फिल्मी व्यंग्य
- **पारिवारिक सम्बन्धों में विघटन**
  सांस्कृतिक पारिवारिक मूल्य पतन
  पारिवारिक विघटन

षष्ठ अध्याय : आर्थिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक हास्य-व्यंग्य काव्य **365–448**

- **आर्थिक व्यंग्य**
  रिश्वत, महँगाई, बेरोजगारी, घोटाले, मिलावट
- **शैक्षणिक व्यंग्य**
  आज की शिक्षा व्यवसायी बनी, आज के शिक्षक कर्तव्य विमुख,
  आधुनिक युग के छात्रों का सांस्कृतिक मूल्य पतन,
  आधुनिक शिक्षा पर व्यंग्य, कवि-सम्मेलन

सप्तम अध्याय : समीक्षा के निष्कर्ष पर हास्य-व्यंग्य काव्य **449–463**

अष्ठम अध्याय : मूल्यांकन - उपसंहार **464–475**